कथा सरिता

धैर्य से विजय

एक बार आदिशंकराचार्य और मंडन मिश्र के मध्य किसी विषय को लेकर बहस छिड़ गई। दोनों अपने-अपने तर्कों पर अडिग थे और कोई हार मानने के लिए तैयार नहीं था। आखिर यह तय हुआ कि दोनों परस्पर शास्त्रार्थ करें और जिसके तर्क अकाट्य सिद्ध हों, वही विजेता माना जायेगा। दोनों के बीच सोलह दिन तक शास्त्रार्थ चला। निर्णायक थी - मंडन मिश्र की विदुषी पत्नी देवी भारती। हार-जीत का निर्णय हो नहीं पा रहा था, क्योंकि दोनों एक से बढ़कर एक तर्क रख रहे थे। इसी बीच देवी भारती को किसी जरूरी काम से कुछ समय के लिए बाहर जाना पड़ा। जाने के पूर्व उन्होंने दोनों विद्वानों के गले में फूलों की एक-एक माला डालते हुए कहा - 'मेरी अनुपस्थिति में मेरा काम ये मालाएं करेंगी।' उनके जाने के बाद शास्त्रार्थ यथावत चलता रहा।

कुछ समय बाद जब वे लौटीं तो उन्होंने दोनों को बारी-बारी से देखा और आदिशंकराचार्य को विजेता घोषित कर दिया। अपने पति को बिना किसी आधार पर पराजित करार देने पर हैरानी जताते हुए लोगों ने उनसे इसका कारण पूछा, तो वे सहजता से बोलीं - 'जब विद्वान शास्त्रार्थ में पराजित होने लगता है, तो वह स्वयं को कमजोर मानकर क्रोधित हो उठता है। मेरे पति के गले की माला क्रोध के तप से सूख गई, जबकि शंकराचार्य की माला के फूल अभी भी ताजे हैं, इससे प्रकट होता है कि शंकराचार्य की विजय हुई है।'

वस्तुत: किसी भी कठिन लक्ष्य की प्राप्ति के लिए बुद्धि के साथ ही धैर्य की भी आवश्यकता होती है, क्योंकि वह आसानी और शीघ्रता से प्राप्त नहीं होता है।

रशिया। भारतीय राजदूत मनोज के.भारती को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात ब्र.कु.चक्रधारी समूह चित्र में।

नागपुर। ब्र.कु.रक्षा का स्वागत करते हुए महाराष्ट्र राज्य परिवहन मंडल के डिवीजनल कंट्रोलर राजीव घाटोले।

सुधार

एक पहुंचे हुए फकीर थे। सादगी और विनम्रता के धनी इस फकीर के जीवन का उद्देश्य था लोगों का भला करना। एक बार राह से गुज़रते वक्त उन्होंने एक युवक को तम्बूरा बजा-बजा कर भद्दे गीत गाते देखा। लोग उसके भद्दे गीत सुनकर नाराज़ हो रहे थे। फकीर को लगा कि यदि युवक कुछ देर और इसी प्रकार गाता रहा तो लोग उसे मारेंगे। फकीर ने युवक की रक्षा के लिए जोर-जोर से यह गाना शुरू कर दिया, 'अल्लाह! तू महान है। बिना तेरी कृपा के कोई कुछ नहीं कर सकता। परवरदिगार! मुझ पर सदा दया-दृष्टि रखना।' फकीर के ऊंचे स्वर में गाने से क्रोधित होकर युवक बोला, 'चुप हो जा फकीर! यह क्या बकवास लगा रखी है?' फकीर ने उसकी बात अनसुनी करते हुए गाना जारी रखा, 'हे खुदा! बेअक्लों को अक्ल दे, भटकों को सही राह दिखा।' गुस्से में आकर युवक ने तम्बूरा फकीर के सिर पर दे मारा। तम्बूरा टूट गया और फकीर के सिर से खून बहने लगा। यह देख युवक वहां से भाग गया। फकीर अपनी कुटिया में पहुंचे तो शागिर्दों ने उनकी मरहम पट्टी की। फिर फकीर ने एक शागिर्द से कहा, 'तू उस युवक के पास जाकर तम्बूरे की कीमत दे और साथ में मिठाई भी ले जाना। क्रोध बहुत बुरी वृत्ति है और मुझे अफसोस है कि मेरे कारण उसे इतना क्रोध आया।' शागिर्द जब ये चीजें लेकर युवक के पास पहुंचा तो उसे बहुत हैरानी हुई। उसने स्वयं के खराब आचरण पर शर्मिंदगी महसूस की। वह उसी वक्त फकीर के पास पहुंचा और माफी मांगी। इसके बाद युवक फकीर का शागिर्द बन गया।

अनेक अवसरों पर विनम्रता व सहनशीलता सुधार का मार्ग बन जाते हैं, इसलिए इन्हें अपनी स्वभाविक वृत्ति बनाकर उचित अवसर पर उपयोग करना चाहिए।

ओगली-शिमला। पूर्व विधायक हीरालाल को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.शकुंतला।

कर्म की पवित्रता

एक जातक कथा है। वाराणसी में राजा ब्रह्मदत्त के शासन में बोधिसत्व एक ब्राह्मण कुल में पैदा हुए। तक्षशिला में ज्ञान प्राप्त करने के बाद वे साधना के लिए वन में चले गए। वहां एक कमल सरोवर के किनारे उन्होंने छोटी-सी कुटिया बना ली। वहां वे घंटों साधना में लीन रहते।

एक दिन सरोवर में उतरकर सूर्य को अर्घ्य देने के पश्चात उनकी दृष्टि खिले हुए कमल के फूलों पर पड़ी। वे उन्हें बिना तोड़े सूंघने लगे। उन्हें ऐसा करते देख अचानक वहां आई एक देवकन्या ने कहा, 'यह जो आप बिना किसी के आज्ञा दिए कमल-फूल सूंघ रहे हैं, यह गंध की चोरी है।' बोधिसत्व ने पूछा, 'न मैं कमल-पुष्प ले जाता हूं, न तोड़ता हूं, मात्र दूर से सूंघता हूं। फिर कैसे यह चोरी हुई?' उसी समय थोड़ी दूर पर एक आदमी कमल तोड़ रहा था। उसे दिखाते हुए बोधिसत्व ने कहा, 'तुम इस आदमी को कुछ नहीं कहोगी, जो कमल तोड़कर ले जा रहा है?' तब देवकन्या बोली, 'जो लोभ में पड़ा हुआ है और जिसका मन मलिन हो, उसे कुछ कहना व्यर्थ है। किंतु जो श्रमण है, जो नित्य पवित्रता के लिए प्रयासरत है, वह बाल की नोक के बराबर भी पाप करे तो यह असहनीय होता है। अत: मैं आपसे निवेदन करती हूं कि आप यह काम न करें, यह आपके पुण्य घटाएगा।' बोधिसत्व, देवकन्या की बात का मर्म जानकर उसके प्रति आभारी हुए और भविष्य में ऐसी गलती न दोहराने का संकल्प लिया।

समाज के लिए प्रकाश-स्तंभ बन चुके महान लोगों को अपने आचरण में अत्यंत सावधान रहना चाहिए। चूंकि समाज उनसे प्रेरणा लेकर सच्चाई के रास्ते पर आगे बढ़ता है, इसलिए उनके द्वारा कोई भी कार्य नीति विरुद्ध नहीं होना चाहिए।

पटियाला। महारानी परणीत कौर राज्यमंत्री को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.राखी तथा ब्र.कु.योगिनी।

लोकसेवा

एक वृद्धा बिल्कुल अकेली थी। पति का देहांत काफी वर्षों पूर्व ही हो गया था और संतान भी नहीं थी। वह अपनी अजीविका के लिए खेतों में छोटे-मोटे काम करती थी। बचे समय में वृद्धा भगवान के स्मरण में लगी रहती। उसकी बड़ी इच्छा थी कि चार धाम की तीर्थ यात्रा करे। वह वर्षों से इसके लिए पैसे जमा कर रही थी। गांव के सभी लोग उसकी इस इच्छा के विषय में जानते थे। आखिर इतनी लंबी प्रतीक्षा के बाद वह समय आया, जब वृद्धा ने तीर्थ यात्रा के लिए जरूरी पैसे जमा कर लिए। वह अत्यधिक प्रसन्न थी, क्योंकि इतने वर्षों की साधना जो पूरी होने जा रही थी। उसने सामान बांधना शुरू किया। जिस दिन उसे तीर्थ यात्रा पर जाना था, उससे एक दिन पहले रात में तूफान आया और गांव का लगभग हर घर तबाह हो गया। कहीं माता-पिता न रहे, तो कहीं संतानों ने प्राण त्याग दिए। लोगों का सबकुछ पानी में बह गया। संयोग से वृद्धा का घर, सामान और पैसे तूफान में सुरक्षित रहे, किंतु गांव वालों के कष्ट को देखकर वृद्धा का मन ही न हुआ कि तीर्थ यात्रा करे। उसने अपनी सारी धनराशि, जनकल्याणार्थ दान कर दी और अपने गांव को फिर स्वयं के पैरों पर खड़ा कर दिया। इससे उसे बड़ा सुकून मिला, किंतु कड़ी मेहनत के कारण बीमार होकर वह कुछ ही दिनों में मृत्यु को प्राप्त हुई। परलोक में धर्मराज ने उसे सर्वाधिक पुण्यवान घोषित कर कहा, 'जिस भावना की अभिव्यक्ति के लिए तीर्थ यात्रा की जाती है, उस भावना का वृद्धा ने व्यवहार में निर्वाह किया है, इसलिए उसका पुण्य सर्वाधिक है।'

लोकसेवा में सच्ची ईश-सेवा निहित है। नि:स्वार्थ भाव से की जाने वाली सेवा से भगवान निश्चित रूप से प्रसन्न होते हैं और फिर उनकी कृपा बरसती है।

रायपुर। छ.ग. के मुख्य वन संरक्षक प्रकाश चन्द्र पाण्डे कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए। मंचासीन हैं ब्र.कु.अशोक गाबा, ब्र.कु. हेमलता, विनोद सहगल, ब्र.कु.कमला तथा एस.के.सिंह।

सेनफ्रांसिस्को। पीस इन द पार्क महोत्सव में ब्रह्माकुमारीज द्वारा आयोजित विभिन्न सांस्कृतिक व अधयात्मिक कार्यक्रमों की झलक।

शाजापुर। योगगुरु बाबा रामदेव को गुलदस्ता भेंट करते हुए ब्र.कु. प्रतिभा। साथ हैं ब्र.कु.हरिकृष्णा व ब्र.कु.दीपक।

कुमारसैन (हि.प्र.)। सिंचाई एवं जन स्वास्थ्य मंत्री विद्या स्टोक्स को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.शकुन्तला।